महासागरीय गर्त (Deeps)— इस महासागर के नितल का आधे से अधिक भाग 4000 से 6000 मीटर की गहराई पर सपाट मैदानों के रूप में है। यहाँ अन्य महासागरों जैसे अत्यधिक गहरे गर्तों (deeps) का प्रायः अभाव है। जावा के निकट स्थित **सुण्डा गर्त** एक अपवाद है। इस गर्त की गहराई 7450 मीटर नापी गई है (चित्र 16.10)।

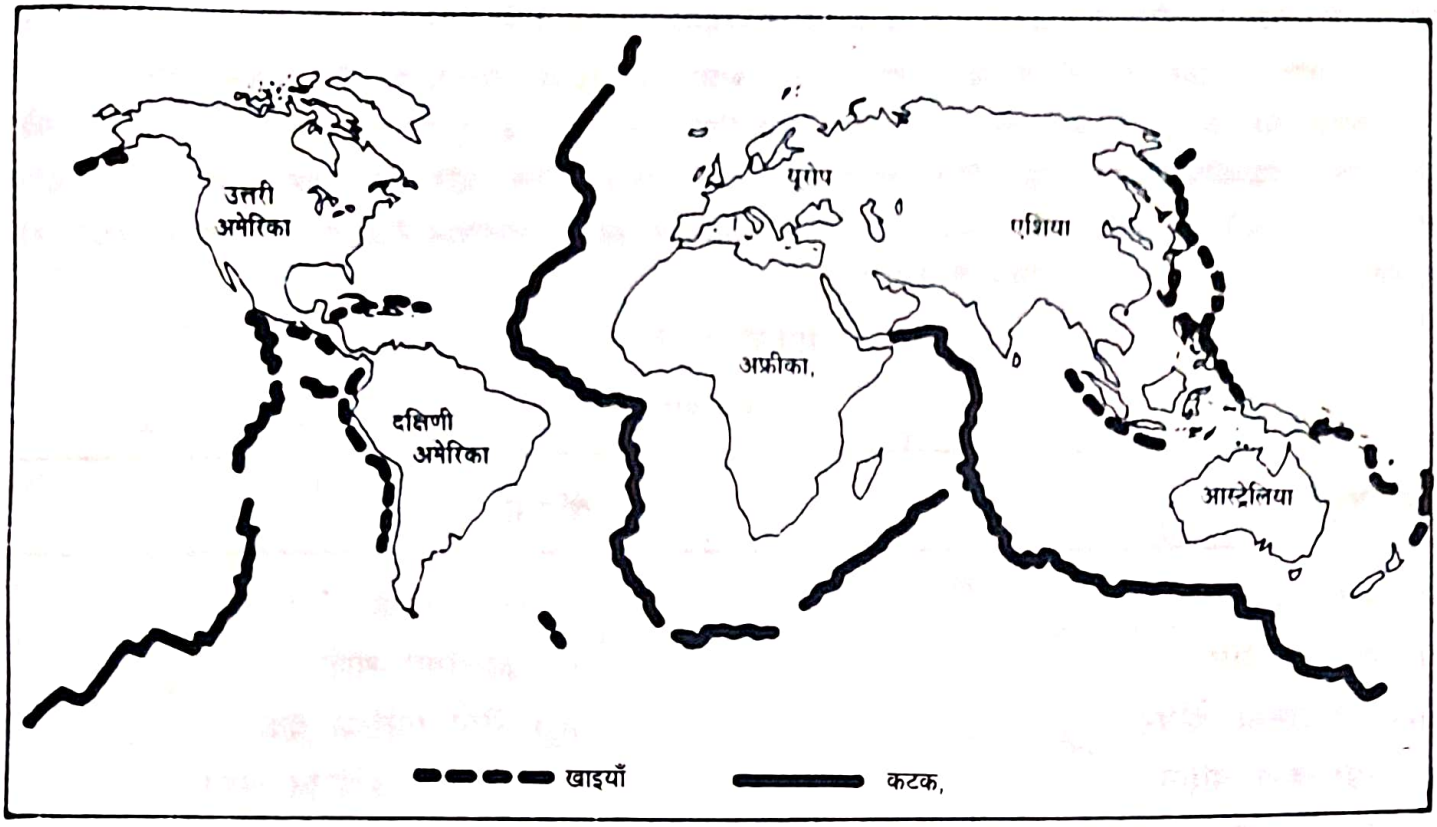

चित्र 16.10 महासागरों के नितल पर स्थित कटक एवं खाइयाँ

हिन्द महासागर के द्वीप (Islands)— अटलान्टिक तथा प्रशान्त महासागर की तुलना में हिन्द महासागर में द्वीपों की संख्या बहुत कम है। कुछ बड़े द्वीपों को महाद्वीपों का ही टुकड़ा माना जाता है। ऐसे द्वीपों में **मेडागास्कर** एवं **श्रीलंका** प्रमुख हैं। **गार्डाफुयी** अन्तरीप से थोड़ी दूर स्थित **सोकोत्रा, जंजीबार** तथा **कोमोरो** आदि छोटे द्वीप भी इसी श्रेणी में आते हैं। **सेशेल्स द्वीप** भी महाद्वीप का एक टुकड़ा है। **अन्डमान-नीकोबार द्वीप पुंज** जो बंगाल की खाड़ी में स्थित हैं अराकान योमा की बाहरी श्रेणियों पर स्थित हैं। इनके अतिरिक्त, कुछ ऐसे छोटे द्वीप हैं जो अन्तःसमुद्री श्रेणियों के ही जल के बाहर निकले हुये भागों पर स्थित हैं; जैसे **लक्काद्वीप** तथा **मालडिव,** तथा मध्य महासागरीय श्रेणी पर स्थित दक्षिणी हिन्द महासागर के अन्य छोटे द्वीप। ज्वालामुखी निर्मित अन्य द्वीपों में **क्रोजेट द्वीप, प्रिन्स एडवर्ड** तथा **न्यू एम्सटर्डम** तथा **सन्तपाल** आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इस महासागर के अयनवर्ती क्षेत्र में प्रवाल भित्तियों से निर्मित द्वीप मिलते हैं, जिनमें **लक्कादिव** एवं **मालदिव द्वीप पुंज, अमिरान्ते, फर्कुहर, कोकोस** तथा चागोस द्वीप समूह विशेष महत्वपूर्ण हैं। प्रवाल भित्तियों से घिरे हुये ज्वालामुखी निर्मित द्वीपों में **मस्कार्नेस, कोमोरो** तथा अन्य छोटे-छोटे द्वीप महत्वपूर्ण हैं।

हिन्द महासागर के पूर्वी भाग का नितल सर्वत्र गहरा है, जिससे इस भाग में द्वीपों का प्रायः अभाव है। **कोकोस द्वीपसमूह** तथा **क्रिस्मस द्वीप** इसके अपवाद हैं। मेडागास्कर के पूर्व स्थित **मारिशस** तथा **रीयूनियन द्वीप** तीव्र ढाल वाले ज्वालामुखी शंकु हैं।

तटवर्ती समुद्र (Marginal Seas)

हिन्द महासागर के तटवर्ती क्षेत्रों के पठारी होने के कारण यहाँ तटवर्ती समुद्रों की संख्या बहुत कम है। वास्तव में इस महासागर के केवल दो तटवर्ती समुद्र हैं-पहला, **लाल सागर** और दूसरा, **फारस**

की खाड़ी। लाल सागर अफ्रीका और अरव प्रायद्वीप के मध्य पायी जाने वाली भ्रंश घाटी में स्थित है जिसमें **स्वेज** और **अकाबा** की खाड़ियाँ हैं। **बाबुल मन्दब जलडमरूमध्य** इस समुद्र को हिन्द महासागर से अलग करता है। फारस की खाड़ी एक छिछले गर्त में स्थित है। ओमान प्रायद्वीप के कारण यह खाड़ी हिन्द महासागर से अलग-थलग पड़ जाती है। ओमान प्रायद्वीप के कारण **हार्मुज जलजमरूमध्य** अधिक सँकरा हो गया है और उसकी चौड़ाई मात्र 80 किलोमीटर तक सीमित है।

अन्य तटवर्ती सागरों में **अरब सागर** तथा **बंगाल की खाड़ी** उल्लेखनीय हैं। किन्तु वास्तव में ये दोनों महासागर के ही विस्तृत भाग हैं, जिन्हें प्रायद्वीपीय भारत एक दूसरे से अलग करता है। इनके अतिरिक्त, **मोजम्बीक चैनल** एक चौड़ा जलडमरूमध्य है, जिसके एक ओर मेडागास्कर का विशाल द्वीप तथा दूसरी ओर अफ्रीका की मुख्य भूमि है। **अन्डमान सागर** अन्डमान-नीकोवार द्वीपचाप तथा क्रा स्थलडमरूमध्य से घिरी हुई बेसिन में स्थित हैं।

सारणी 16.3

हिन्द महासागर

गहरी समुद्री बेसिनें	**श्रेणियाँ**
(i) अरब बेसिन	(i) बंगाल श्रेणी
(ii) सोमाली बेसिन	(ii) कार्ल्सबर्ग श्रेणी
(iii) मेडागास्कर बेसिन	(iii) डीगो गार्सिया बैंक
(iv) अगुल्हास बेसिन	(iv) मध्यवर्ती इंडियन श्रेणी
(v) दक्षिण-पश्चिम इन्डियन-अन्टार्कटिक बेसिन	(v) मस्कारेन श्रेणी
(vi) दक्षिण-पूर्व इन्डियन-अन्टार्कटिक बेसिन	(vi) अटलान्टिक-इन्डियन अनुप्रस्थ श्रेणी
(vii) दक्षिणी आस्ट्रेलिया बेसिन	(vii) क्रोजेट श्रेणी
(viii) इन्डिया आस्ट्रेलिया बेसिन	(viii) कर्ग्युलेन-गासबर्ग श्रेणी
	(ix) मकारी श्रेणी
गंभीर समुद्री खाइयाँ	
(i) सुन्डा खाई	
(ii) नीकोबार खाई	